शीत युद्ध

Dr.vini sharma.
Political science

द्वितीय विश्व युद्ध

ऐसा माना जाता है की द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि पहले विश्व युद्ध के साथ ही बनने लगी थी। पहले विश्व युद्ध में जर्मनी के हारने के बाद वर्साय की संधि पर हस्ताक्षर करने के साथ ही बहुत भारी नुकसान भुगतना पड़ा, इसे एक बड़े भू - भाग को खोना पड़ा एवं सेना को सीमित कर दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध सितम्बर 1939 ई से 1945 ई तक लड़ा गया। 6 वर्ष तक चलने वाले इस युद्ध में अरबो की संपत्ति का नुकसान हुआ, करोड़ों बेगुनहा लोग मारे गये।

इस युद्ध में करीब 70 देशों ने भाग लिया एवं संम्पूर्ण विश्व दो भागों में बट गया जिसे मित्र राष्ट्र और धुरी राष्ट्र के नाम से पुकारा जाने लगा।

द्वितीय विश्वयुद्ध (1939-45)

मित्र राष्ट्र

- ✓ अमेरिका
- ✓ सोवियत संघ
- ✓ ब्रिटेन
- ✓ फ्रांस

धुरी राष्ट्र

- ✓ जर्मनी
- ✓ जापान
- ✓ इटली

द्वितीय विश्व युद्ध के कारण

मित्र राष्ट्रों ने पहले विश्व युद्ध में जर्मनी के साथ बुरा व्यवहार किया जिससे जर्मनी बदला लेने के लिए आतुर था , उसी समय जर्मनी में हिटलर और इटली में मुसोलिनी ने सत्ता पर आकर दूसरे विश्व युद्ध के बीज बो दिया।

☞ तानाशाही शक्तियो का जन्म :- उस समय सभी देश अपनी - अपनी शक्ति को बढ़ाने में लगे थे तभी हिटलर एवं मुसोलिनी दोनों कट्टर तानाशाह बनकर उभरे। दोनों ने ही लोकतन्त्र को ख़त्म कर दिया और राष्ट्रसंघ के सदस्य बनने से इंकार कर दिया।

☞ विश्व मंदी का असर :- 1930 ई में वैश्विक आर्थिक मंदी ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को हिलाकर रख दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध का आगाज

- 1 सितम्बर 1939 ई को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण करके उसपर अधिकार कर लिया और दूसरी तरफ फ्रांस और इंग्लैंड ने जर्मनी पर आक्रमण करने की घोषणा कर दी।

- 1940 ई में जर्मनी ने नार्वे, होलैंड, बेल्जियम पर भी अधिकार कर लिया और अंत में फ्रांस को भी घुटने पर मजबूर कर दिया।

- जर्मनी इंग्लैंड को हराने में नाकाम रहा तथा 1944 ई में इटली ने अपनी हार मान ली। अमेरिका ने 1945 में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम्ब गिरा दिया जिससे लाखो लोग मारे गये। फिर हिटलर ने भी घुटने टेक दिए जिसके साथ ही युद्ध का अंत हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध का अंत

☞ अमेरिका ने 1945 में जापान के दो शहरों हिरोशिमा तथा नागासाकी पर दो परमाणु बम गिराए।

लिटिल बॉय

फैट मेन

दोनों बमो के क्षमता 15 से 21 किलोटन तक थी

अमेरिका द्वारा बम गिराए जाने का कुछ विद्वानों द्वारा समर्थन किया गया तथा अन्य द्वारा विरोध किया गया।

आलोचक - आलोचकों ने कहा की बम गिरना जरुरी नहीं था क्योकि जापान हार मैंने वाला था और बम गिराने से केवल विनाश हुआ। इस हमले का मुख्य उद्देश्ये अमेरिका द्वारा शक्ति प्रदर्शन था।

समर्थक - समर्थकों ने कहा की आगे होने वाली हानि को रोकने के लिए बम गिरना ज़रूरी था।

द्वितीय विश्व युद्ध के परिणाम

- जन व धन की अत्यधिक हानि हुई।
- अमेरिका एवं सोवियत संघ का शक्ति के रूप में उदय हुआ।
- सयुंक्त राष्ट्र संघ की स्थापना।
- साम्यवादी प्रवृति में वृद्धि।
- शीतयुद्ध का आरंभ।
- उपनिवेशवाद का पतन।
- यूरोप के राजनैतिक मानचित्र में परिवर्तन

निष्कर्ष

द्वितीय विश्व युद्ध ने भयंकर तबाही मचाई जिसे आज भी जापान में देखा जा सकता है। जापान में गिरे परमाणु बम के निशान मिटे नहीं। इस युद्ध ने यह तो तय कर दिया की देशो के बीच समय समय पर बातचीत होनी जरुरी है। इस युद्ध में कई सारे नये अविष्कार भी हुए जैसे जेट इंजन, राडार, आदि। और इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है की सयुंक्त राष्ट्र संघ की स्थापना, जो आज भी कार्य कर रहा है।

शीत युद्ध(1945-90)

पहली दुनिया

दूसरी दुनिया

NATO
SEATO
CENTO

अमेरिका (USA)

- ✓ पूँजीवाद
- ✓ उदारवाद
- ✓ लोकतंत्र

सोवियत संघ (USSR)

- ✓ साम्यवाद
- ✓ समाजवाद

विचारधारा

पूंजीवाद = पूंजीवाद के अंतर्गत एक देश के सभी उत्पादन सम्बंधित फैसले लेने का अधिकार सामान्य जनता के हाथ में होता है। दूसरे शब्दों में देश में निजी क्षेत्र पूरी तरह से स्वतन्त्र होता होता है।

समाजवाद = इस व्यवस्था में एक देश के सभी उत्पादन सम्बंधित फैसले लेने का अधिकार मुख्य रूप से सरकार के हाथ में होता है। निजी क्षेत्र या तो पूरी तरह अनुपस्थित होता है या फिर सरकार के अनुसार कार्य करता है।

विचारधारा

उदारवाद = इस विचार के अंतर्गत देश में अधिक से अधिक स्वतत्र प्रदान करने के प्रयास किये जाते है।

साम्यवाद = साम्यवादी व्यवस्था समानता पर आधारित होती है। जहा सभी लोगो को सामान अधिकार प्रदान किये जाते है।

लोकतंत्र = लोकतान्त्रिक व्यवस्था में सामान्य जनता द्वारा अपने शासको का चुनाव स्वयं किया जाता है।

शीतयुद्ध

त युद्ध से अभिप्राय एक ऐसी स्तिथि से है जिसमे दो देशो के बीच
त्तरंजित (आमने सामने की लड़ाई) युद्ध न होकर केवल विचाधारात्मक
ड़ाई होती है। दूसरे शब्दों में, दोनों महाशक्तियां युद्ध के आलावा अलग
लग तरीको (गठबंधन बना कर, हथियारों के निर्माण द्वारा) से खुद तो
क दूसरे से बेहतर साबित करने का प्रयास करती है और अपरोध के तर्क
कारण युद्ध करने का खतरा मोल नहीं लेती।

अपरोध

अपरोध का तर्क वह स्थिति है जिसमे दोनों देश आपस में युद्ध करने का खतरा नहीं लेते क्योकि दोनों देश बहुत शक्तिशाली होते है और युद्ध के बाद होने वाली हानि को उठाना नहीं चाहते है।

दो ध्रुवीय विश्व

वह स्थिति जब विश्व में शक्ति के दो केंद्र हो, दो ध्रुवीयता कहलाती है और ऐसे विश्व को दो ध्रुवीय विश्व कहा जाता है।

सैन्य संधि संगठन

अमेरिका

North Atlantic treaty organization (NATO)

उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (4 अप्रैल 1949)

उद्देश्य

- *एक दूसरे की मदद करेंगे।*
- *सभी सदस्य मिल जुलकर रहेगा।*
- *अगर एक पर हमला होगा तो हम अपने ऊपर हमला मानेगे और मेल कर मुकाबला करेंगे।*

सैन्य संधि संगठन

अमेरिका

South East Asian Treaty Organisation (1954)

उद्देश्य

- साम्यवादियों की विस्तारवादी नीतियों से दक्षिण पूर्व एशियाई देशो की रक्षा करना।

Central Treaty Organisation (1955)

उद्देश्य

- सोवियत संघ को मध्य पूर्व से दूर रखना।
- साम्यवाद के प्रभाव को रोकना।

सोवियत संघ

वारसा सन्धि

उद्देश्य

- इसका उद्देश्य नाटो में शामिल देशो से मुकाबला करना था।

गुटों के निर्माण का कारण

शीत युद्ध के दायरे

शीत युद्ध के दायरों से हमारा अभिप्राय उन स्थितियों से है जिनमे ऐसा लगा की दोनों महाशक्तियों में बीच युद्ध हो जाएगा पर युद्ध नहीं हुआ।

- ✓ क्युबा मिसाइल संकट |(1962)
- ✓ बर्लिन के नाके बंदी | (1948)
- ✓ कोरिया संकट | (1950)
- ✓ कांगो (1960)
- ✓ वियतनाम मे अमेरिका का हस्तक्षेप |(1954-1975)
- ✓ हंगरी मे सोवियत संघ का हस्तक्षेप |(1956)

परमाणु सन्धि

- परमाणु परीक्षण प्रतिबंध सन्धि।
- परमाणु प्रक्षेपास्त्र परिसीमन संधि।
- परमाणु आप्रसार सन्धि।

शीतयुद्ध

शीत युद्ध से अभिप्राय एक ऐसी स्तिथि से है जिसमे दो देशो के बीच रक्तरंजित (आमने सामने की लड़ाई) युद्ध न होकर केवल विचाधारात्मक लड़ाई होती है। दूसरे शब्दों में, दोनों महाशक्तियां युद्ध के आलावा अलग अलग तरीको (गठबंधन बना कर, हथियारों के निर्माण द्वारा) से खुद तो एक दूसरे से बेहतर साबित करने का प्रयास करती है और अपरोध के तर्क के कारण युद्ध करने का खतरा मोल नहीं लेती।

क्यूबा मिसाइल संकट (1962)

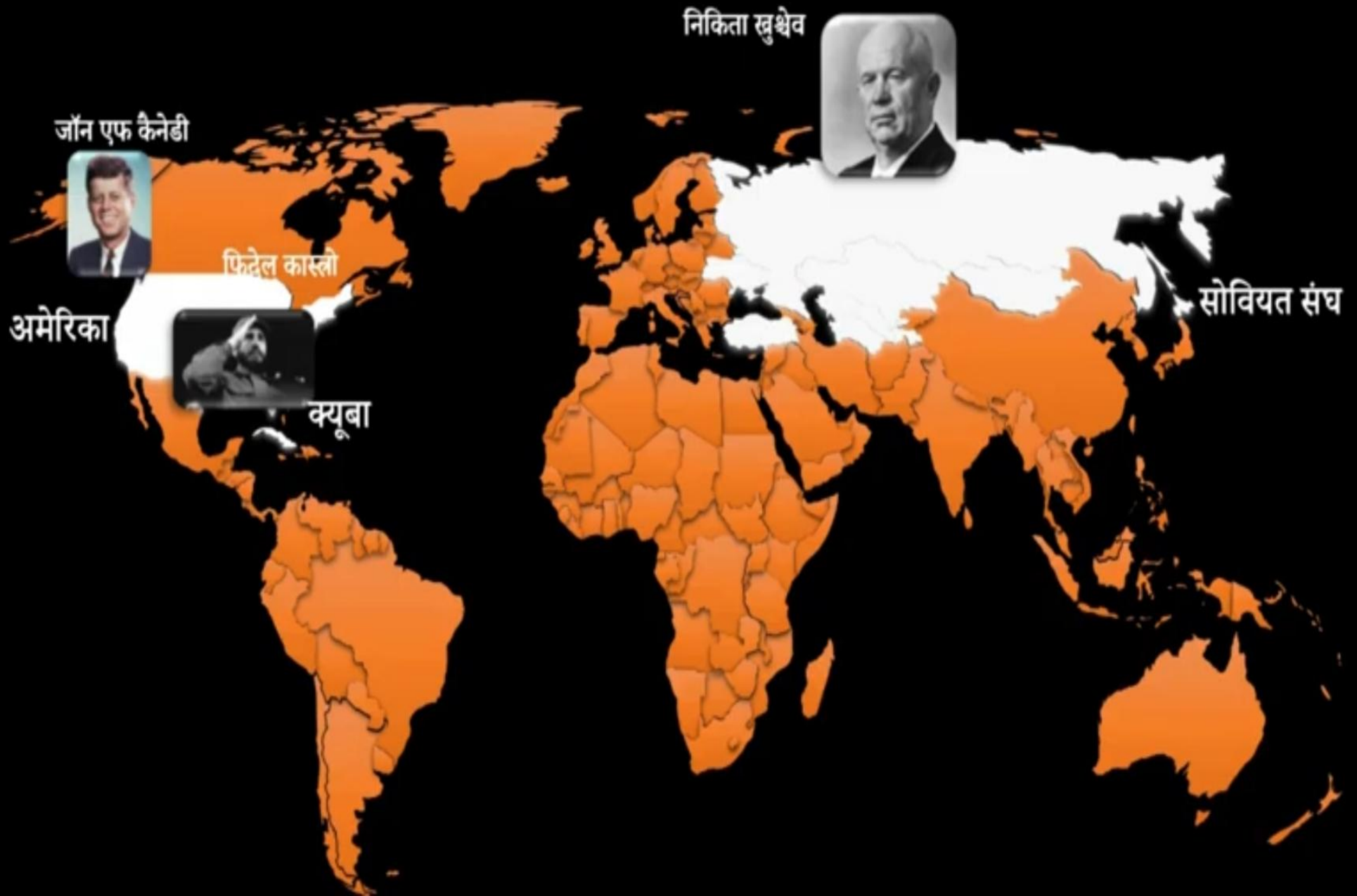

सारांश

अमेरिका पूंजीवादी देश.... सोवियत संघ समाजवादी देश..... क्यूबा अमेरिका के किनारे बसा हुआ एक द्वीप राष्ट्र ..... क्यूबा का सोवियत संघ को समर्थन..... सोवियत संघ को क्यूबा पर अमेरिका द्वारा कब्ज़ा करे जाने की चिंता..... सोवियत संघ द्वारा क्यूबा पर मिसाइलें तैनात किया जाना..... अमेरिका पर खतरा बढ़ा..... अमेरिका को लगभग 3 हफ्ते बाद पता चला..... अमेरिका का गंभीर कदम..... अमेरिका द्वारा जंगी बड़े आगे किये जाना..... दोनों महाशक्तियां आमने सामने.... पूरे विश्व को युद्ध का डर..... दोनों महाशक्तियों द्वारा समझदारी... जंगी बेड़ो का पीछे हटना.... शीत युद्ध का चरम बिंदु

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन

Non-Aligned Movement (NAM)

गुटनिरपेक्षता से अभिप्राय है गुटों से दूर रहना है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन शीतयुद्ध के समय दो महाशक्तियो के तनाव के बीच, एक नये आन्दोलन का उदय हुआ जो दो गुटों में बट रहे देशों से अपने को अलग रखने के लिए था । जिसका उद्देश्य विश्व शांति था । इसे ही गुटनिरपेक्ष आन्दोलन कहते है।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन महाशक्ति के गुटों में शामिल न होने का आन्दोलन था। लेकिन ये अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से अलग - थलग नहीं था परन्तु सभी अन्तर्राष्ट्रीय मामलों से सरोकार रखता था।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन

☞ (1956) में

जवाहर लाल नेहरू - भारत

जोसेफ ब्रांज टीटो -युगोस्लवीया

गमाल अब्दुल नासिर -मिस्र

ने बांडुंग में एक सफल बैठक की, जिससे गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की विचारधारा का उदय हुआ।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन

☞ पहला सम्मेलन 1961 में बेलग्रेड में हुआ

ाहर लाल नेहरू - भारत

गमाल अब्दुल नासिर -मिस्र

एनक्रुमा - घाना

जोसेफ ब्रांज टीटो -युगोस्लवीया

सुकर्णो -इंडोनशि

जिसमे 25 देश शामिल हुए। इसके 14वें सम्मलेन में 166 सदस्य देश और 15 पर्यवेक्षक देश शामिल हुए।

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन

गुटनिरपेक्षता की नीति पंचशील के पांच सिद्धांतों पर आधारित थी। जो निम्नलिखित थे –

- ✓ एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए सम्मान
- ✓ एक दूसरे के सैन्य और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना
- ✓ आपसी सहमति
- ✓ समानता और पारस्परिक लाभ
- ✓ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और आर्थिक सहयोग।

पृथकवाद

पृथकवाद से हमारा अभिप्राय ऐसी नीति से है जिसमे एक देश खुद को अन्तर्राष्ट्रीय मामलो से अलग रखता है। दूसरे शब्दों में वह किसी अन्य देश से कोई संबंध नहीं रखता।

क्या गुटनिरपेक्षता पृथकवाद है ?

गुटनिरपेक्षता पृथकवाद नहीं है क्योकि पृथकवाद का अभिप्राय एक ऐसी नीति से है जिसमे एक देश खुद को अन्तर्राष्ट्रीय मामलो से अलग रखता है। जबकि गुटनिरपेक्षता केवल दोनों महाशक्तियों के गुटों से दूर रहने से सम्बंधित थी बाकि सभी अन्य देशो से गुटनिरपेक्ष देशों के अच्छे सम्बन्ध थे।

तठस्थता

तठस्थता का मतलब होता है युद्ध से दूर रहना अर्थात युद्ध में शामिल न होना। तठस्थ देश न तो युद्ध में हिस्सा लेते है न ही उसे समाप्त करवाने क लिए कोई कदम उठाते है।

क्या गुटनिरपेक्षता तठस्थतावाद है ?

गुटनिरपेक्षता तठस्थतावाद नहीं है क्योकि तठस्थ देश वह देश होता है जिसे युद्ध क होने या न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता न तो वह युद्ध में हिस्सा लेता है न ही उसे समाप्त करवाने के लिए कोई कदम उठता है। अगर गुटनिरपेक्षता की बात करे तो इसमें शामिल सभी देशो ने युद्ध में हिस्सा तो नहीं लिया पर उसे शांत करवाने के लिए निरन्तर कदम उठाये। गुटनिरपेक्ष देशो ने महाशकितयों के हर सही कदम का समर्थन किया तथा हर गलत कदम का विरोध भी किया जो युद्ध शांत करवाने में उनकी भूमिका को दर्शाता है।

गुटनिरपेक्षता और भारत

गुटनिरपेक्षता में शामिल होने से भारत को निम्नलिखित फायदे हुए :-

- ✓ स्वतन्त्र विदेश नीति
- ✓ दोनों महाशक्तियों का समर्थन
- ✓ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली
- ✓ एक महाशक्ति द्वारा विरोध किये जाने पर दूसरी महाशक्ति का समर्थन
- ✓ अन्य विकासशील देशो का सहयोग

भारतीय नीति की आलोचना

- ✓भारत की नीति में स्थिरता नहीं
- ✓भारत की नीति सिंद्धातविहीन
- ✓अंतर्राष्ट्रीय फैसले लेने से बचने की कोशिश
- ✓1971 में सोवियत संघ द्वारा ली गई मदद, गुटनिरपेक्षता का उल्लंघन
- ✓दोनों महाशक्तियों से लाभ प्राप्त करने की कोशिश करना

गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता

गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता से हमारा अभिप्राय आज समय में गुटनिरपेक्षता की ज़रूरत से है।

बहुत से विद्वानों का यह मानना है की वर्तमान में गुटनिरपेक्षता की कोई ज़रूरत नहीं है क्योकि गुटनिरपेक्षता का जन्म शीत युद्ध के कारण हुआ था और अब शीत युद्ध ख़त्म हो चूका है इसीलिए अब गुटनिरपेक्षता अप्रासंगिक है।

पर वह देश जो गुटनिरपेक्षता में शामिल है उनके इस बारे में अलग विचार है :-

गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता

गुटनिरपेक्षता की आज समय में प्रासंगिकता (उपयोगिता)

- ✓शांति को बढ़ावा देना
- ✓विकास को बढ़ावा देना
- ✓अंतर्राष्ट्रीय समस्याओ के लिए जागरूकता पैदा करना
- ✓छोटे देशो की स्वतन्त्र की रक्षा करना
- ✓पर्यावरण और आतंकवाद जैसी समस्याओ का मुकाबला करने के लिए।

नव अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था
NEW INTERNATIONAL ECONOMIC ORDER(NIEO)

शीत युद्ध के दौरान बनी तीसरी दुनिया यानि गुटनिरपेक्षता में शामिल लगभग सभी वह देश थे जो अभी अभी आज़ाद हुए थे और गरीब व अल्पविकसित थे। उस समय उनके सामने मौजूद सबसे बड़ी चुनौती आर्थिक विकास करना तथा देश को गरीबी के जाल से बाहर निकालना था।

इसी कारणवश तीसरी दुनिया के देशो ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आवाज़ उठाई और मांग की, कि उन्हें भी विकास करने के सामान अवसर मिलने चाहिए।

नव अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था

इसी मांग को देखते हुए 1972 में संयुक्त राष्ट्र संघ के व्यापर और विकास से सम्बंधित सम्मेलन UNCTAD (United Nations Conference on Trade and Development) में टुवर्ड्स अ न्यू ट्रेड पॉलिसी फॉर डेवलपमेंट(Towards a New Trade Policy for Development) के नाम से एक रिपोर्ट पेश की गई। इसमें मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रणाली में सुधार के प्रस्ताव थे।

- ✓ अल्पविकसित देशो का अपने संसाधनों पर पूर्ण नियंत्रण
- ✓ अल्पविकसित देशो को विकसित के बाजार में व्यपार करने का मौका मिले।
- ✓ विकसित देशो से मंगाई जाने वाली प्रौद्योगिकी की कीमत कम हो।
- ✓ अल्पविकसित देशो को भी अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में विकसित देशो जितना महत्व प्रदान किया जाये।